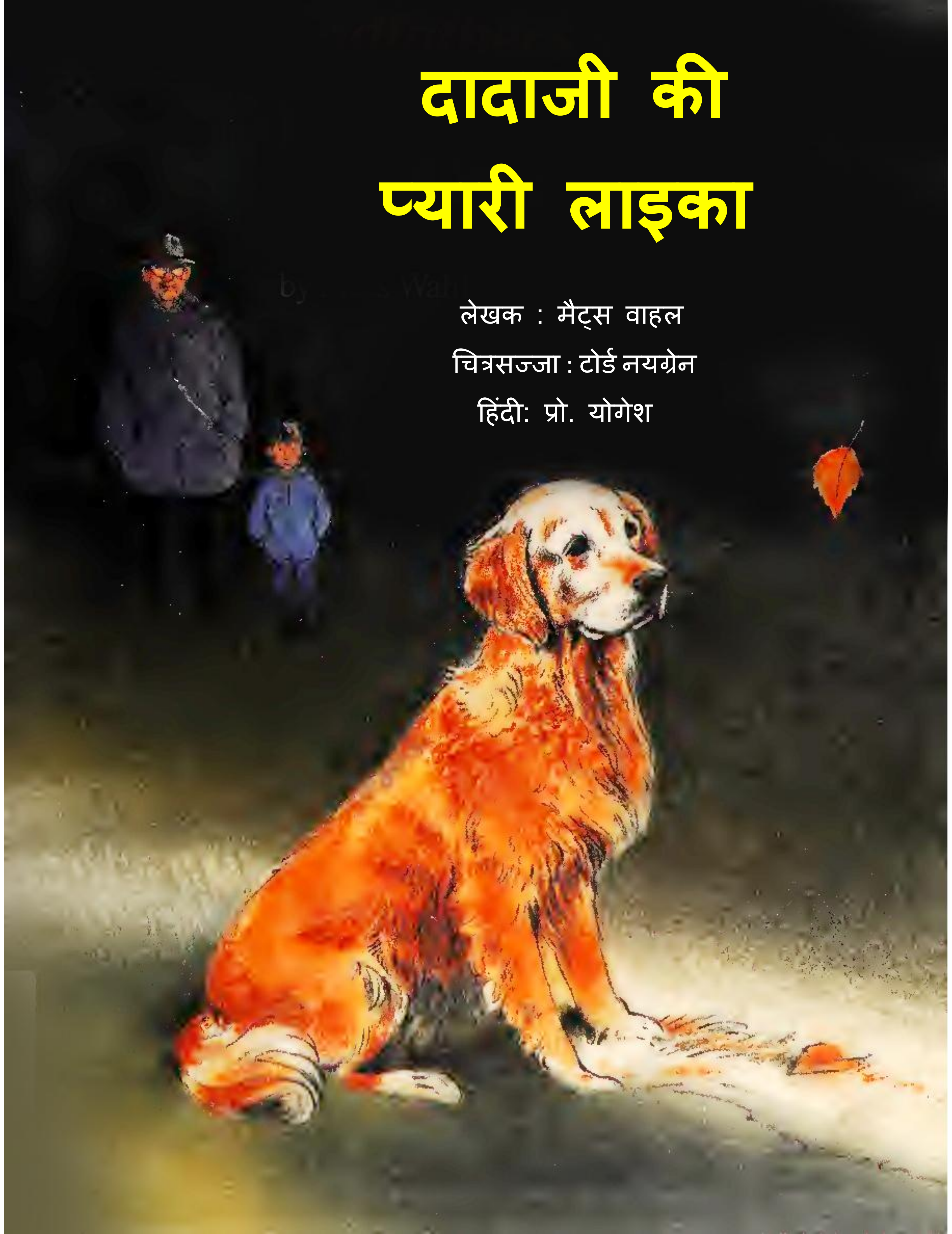
दादाजी की प्यारी लाइका

लेखक : मैट्स वाहल
चित्रसज्जा : टोर्ड नयग्रेन
हिंदी: प्रो. योगेश





दादाजी की प्यारी लाइका

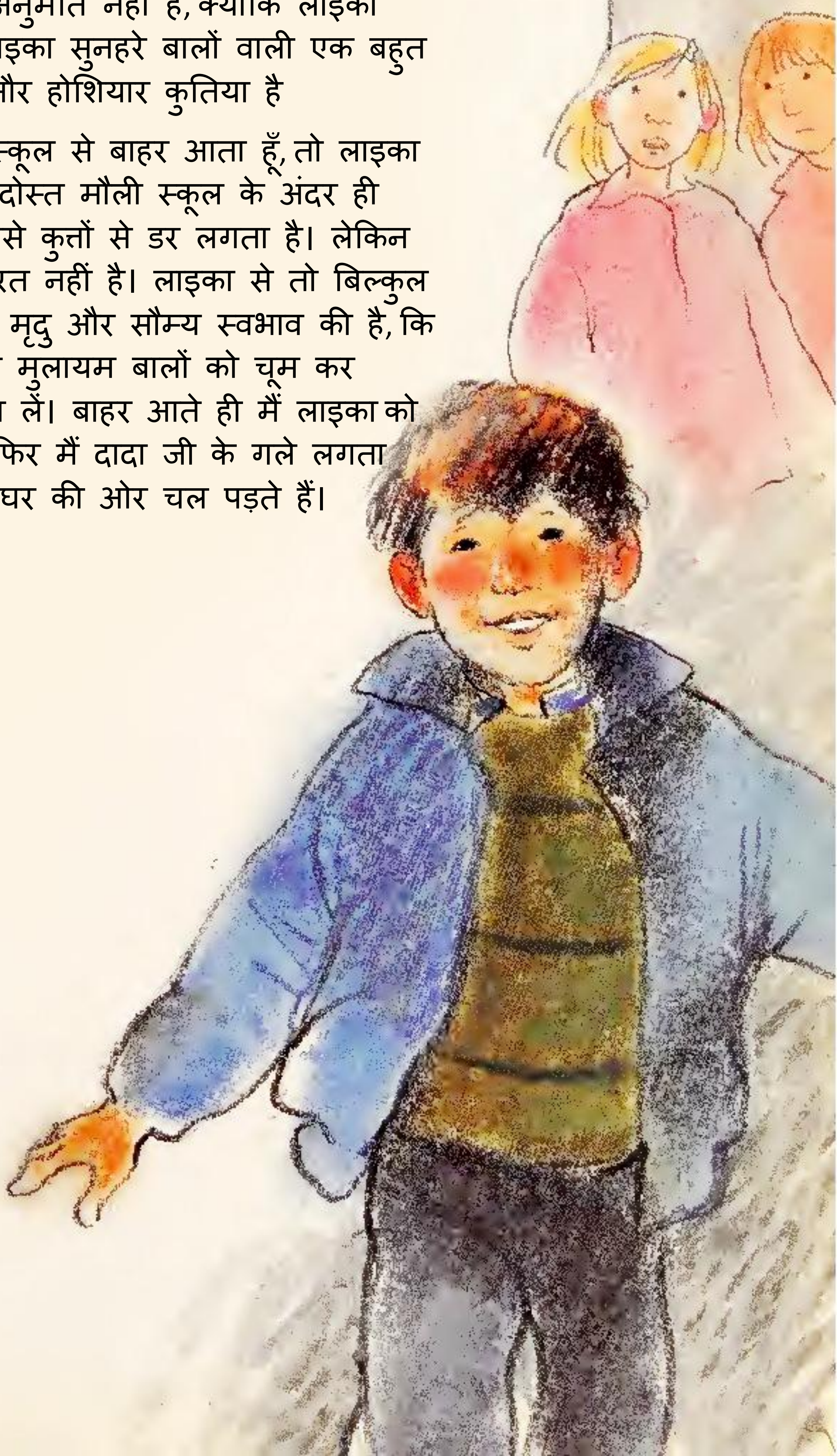
लेखक : मैट्स वाहल
चित्रसज्जा : टोर्ड नयग्रेन
हिंदी: प्रो. योगेश





मेरा नाम मैथ्यू है। रोज़ाना स्कूल की छुट्टी के समय मेरे दादाजी स्कूल के बाहर मेरा इंतज़ार कर रहे होते हैं। उनको अंदर आने की अनुमति नहीं है, क्योंकि लाइका उनके साथ होती है। लाइका सुनहरे बालों वाली एक बहुत ही प्यारी, विशालकाय और होशियार कुतिया है

जब मैं दौड़ता हुआ स्कूल से बाहर आता हूँ, तो लाइका भौंकने लगती है। मेरी दोस्त मौली स्कूल के अंदर ही खड़ी रहती है, क्योंकि उसे कुत्तों से डर लगता है। लेकिन उसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। लाइका से तो बिल्कुल भी नहीं। लाइका इतनी मृदु और सौम्य स्वभाव की है, कि मन करता है कि उसके मुलायम बालों को चूम कर उनमें अपना चेहरा छिपा लें। बाहर आते ही मैं लाइका को गले से लगा लेता हूँ। फिर मैं दादा जी के गले लगता हूँ, और फिर हम तीनों घर की ओर चल पड़ते हैं।



हमारे घर जाते समय लाइका जंगल के किनारे-किनारे दौड़ती चलती है। वह हर चीज़ को सूंघती रहती है, और लगातार अपनी दुम हिलाती रहती है।

"देखो तो, सनोबर का पेड़ कितना पीला हो गया है" दादा जी उसकी ओर इशारा करके कहते हैं।

"क्या यह अब ज़िंदा नहीं रह पायेगा?" मैंने पूछा।

दादा जी अपना सर हिलाते हैं।

"नहीं," वे बोले। "यह अपनी पत्तियों के लिए ज़मीन से पानी नहीं सोख पा रहा है। जब पत्तियों को पानी नहीं मिलता तो वे पीली पड़ कर गिरने लगती हैं।"

"लेकिन पेड़ अब पानी क्यों नहीं सोख पा रहा?"

"क्योंकि जाड़ों में पानी जम कर बर्फ बन जाता है। और अगर वह पेड़ के अंदर जाकर जम गया तो पेड़ फट सकता है।"

"लेकिन उस दूसरे पेड़ के साथ ऐसा क्यों नहीं हुआ?" मैंने पूछा।

"वह एक विलो (willow) का पेड़ है। वह सनोबर की तरह ठण्ड से डरता नहीं है। यह अधिक लम्बे समय तक हरा रहता है। शायद यह थोड़ा दुस्साहसी है।"

मैं सोच रहा हूँ कि दुस्साहसी का मतलब क्या हो सकता है, लेकिन मैंने पूछा नहीं। कुछ चीज़ें मैं खुद से ही समझना चाहता हूँ।

और सारे समय लाइका इधर-उधर दौड़ती फिरती है, हर चीज़ को सूंघते हुए।





जब हम घर पहुँचते हैं तो लाइका को उसके कटोरे में भोजन दिया जाता है। वह अधिक नहीं खाती है। गनीमत है कि मैं कुत्ता नहीं हूँ, क्योंकि उसका खाना देखने में बिलकुल अच्छा नहीं लगता। मैं पनीर के दो सैंडविच खाता हूँ, और दादा जी मेरे लिए चॉकलेट वाला गर्म दूध बनाते हैं।

खा-पी कर मैं दादा जी के मुलायम कालीन पर आराम से लेट जाता हूँ। यह कालीन उनके सोफा के सामने बिछा है, और इसपर काली और भूरी धारियां पड़ी हैं। लाइका भी मेरे बगल में लेट जाती है, और मैं अपना सर उसके शरीर पर टिका लेता हूँ। एक हाथ से मैं उसकी पीठ सहलाता हूँ, और दूसरे से मुलायम कालीन।

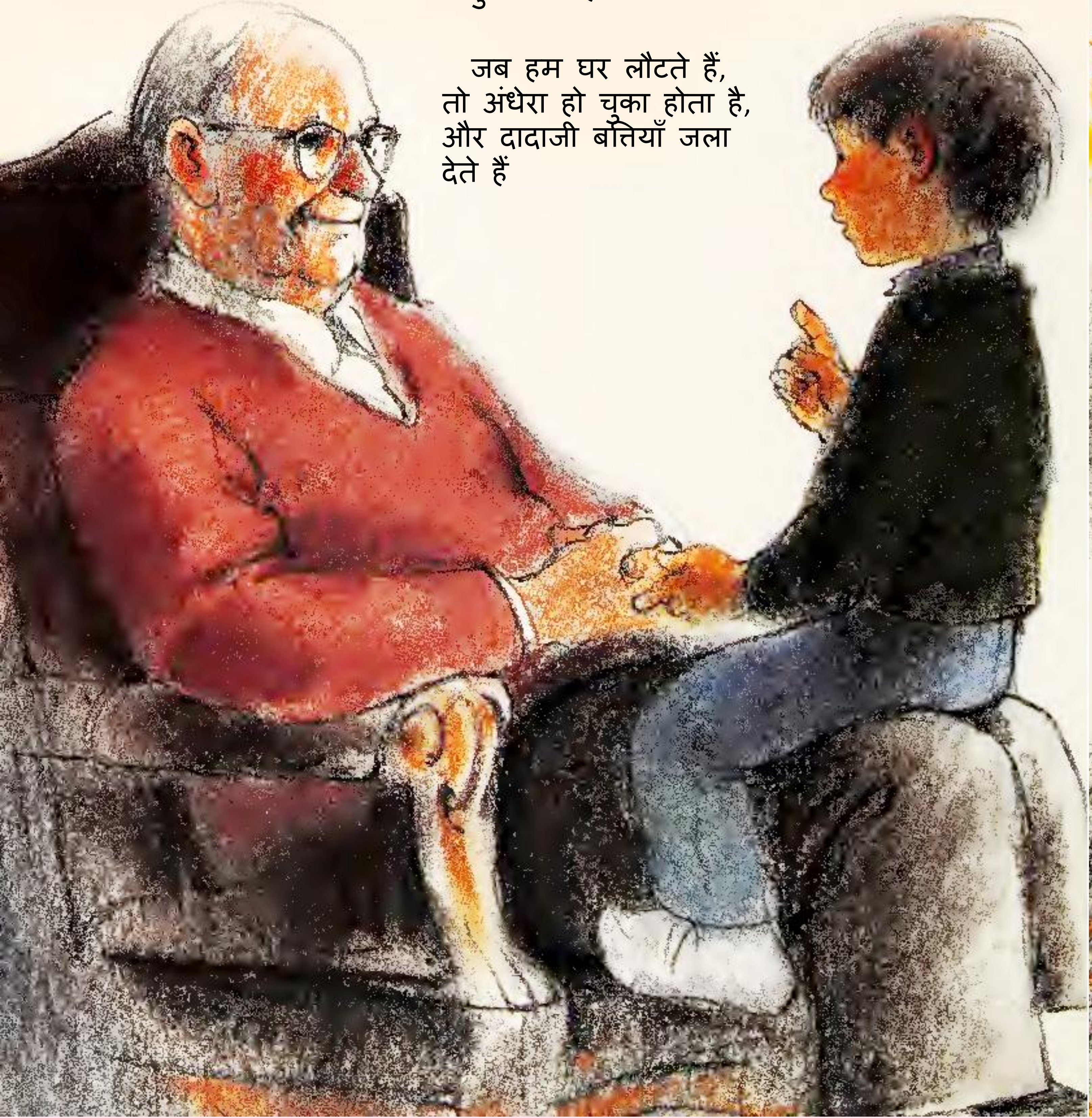
कभी कभी दादा जी मुझसे कहते हैं कि वह एक नया कालीन खरीदने वाले हैं। "यह वाला बहुत पुराना हो गया है," वह बोले। लेकिन मैं उनसे कहता हूँ कि ऐसा न करें क्योंकि मुझे यह कालीन बहुत पसंद है। मुझे लाइका के बगल में इस पर लेटना बहुत अच्छा लगता है।



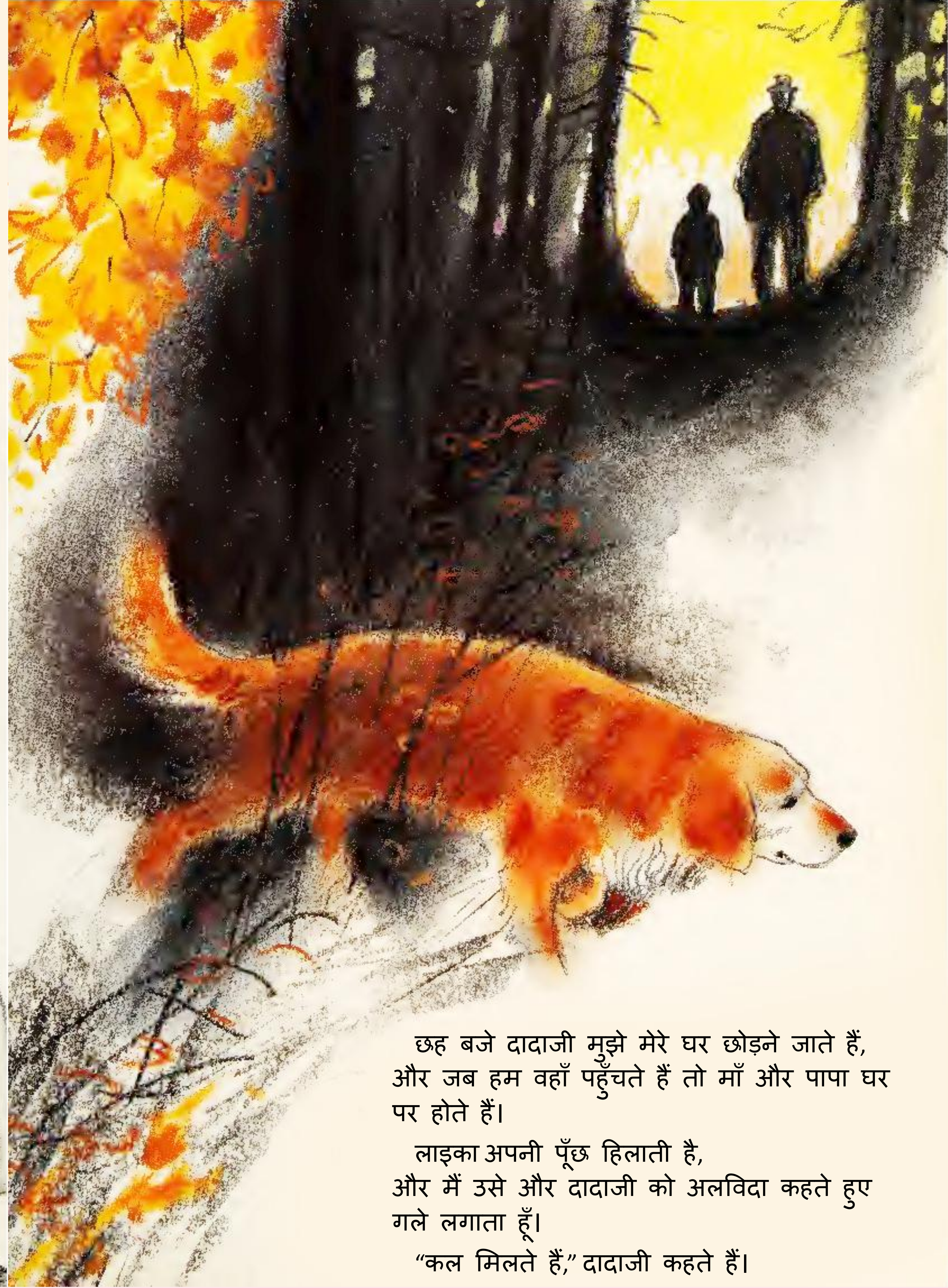
जब मैं आराम कर रहा होता हूँ, दादाजी अपनी कुर्सी पर बैठे होते हैं।
वो मुझसे पूछते हैं कि मैं पूरे दिन क्या कर रहा था,
और मैं उनकी गोद में चढ़कर उन्हें बताता हूँ कि हमने स्कूल में एक गुफा बनाई थी।

थोड़ी देर बाद वो कहते हैं कि अब टहलने का समय हो गया है।
"इससे पहले कि बहुत अंधेरा हो जाए," वो खिड़की से बाहर देखते हुए कहते हैं।

हम अपने कोट पहनते हैं और उनके घर के पीछे के जंगल में चले जाते हैं।
वह एक बड़ा जंगल है, झील के किनारे,
और लाइका पेड़ों के बीच दौड़ती है और पानी के पास खेलती है।
कभी-कभी दादाजी उसे अपने पास बुला लेते हैं।।



जब हम घर लौटते हैं,
तो अंधेरा हो चुका होता है,
और दादाजी बत्तियाँ जला
देते हैं



छह बजे दादाजी मुझे मेरे घर छोड़ने जाते हैं,
और जब हम वहाँ पहुँचते हैं तो माँ और पापा घर
पर होते हैं।

लाइका अपनी पूँछ हिलाती है,
और मैं उसे और दादाजी को अलविदा कहते हुए
गले लगाता हूँ।

“कल मिलते हैं,” दादाजी कहते हैं।



जिस दिन दादाजी मुझे बताते हैं कि लाइका बीमार है, उस दिन बारिश हो रही होती है।

बारिश होती ही जाती है — लगातार, और आसमान बहुत अँधेरा है।

जब हम स्कूल से घर की ओर चलते हैं, तो हवा हम पर ज़ोर से टकराती है, और ऐसा लगता है जैसे हम ज़मीन से उड़ जाएंगे।

“अब पेड़ों से पत्ते झड़ने शुरू हो जाएँगे,” दादाजी कहते हैं। “जब हम घर पहुँचेंगे, तो लाइका को तौलिये से सुखा देंगे।”

वह पूरी तरह भीग चुकी होती है, बिल्कुल नहाने के बाद जैसी।

मैं उसे जितना हो सके उतना सुखाने की कोशिश करता हूँ। जब हम कालीन पर लेटते हैं, तो उसके शरीर के गीले बाल मेरी गर्दन से लगे होते हैं।



दादाजी अपनी कुर्सी के पास की लाइट जला देते हैं।
"मुझे तुमसे कुछ कहना है," वे कहते हैं।
"लाइका बीमार है। मैं उसे शुक्रवार को डॉक्टर के पास ले जाऊँगा।"

"उसे क्या हुआ है?" मैं पूछता हूँ।
"वह खाना बंद कर चुकी है," दादाजी कहते हैं। "वह अब सिर्फ़ पानी पीती है।
अगर तुम ध्यान से देखो, तो पता चलेगा कि उसका वज़न कम हो गया है।"

मैं उठकर उसे सहलाता हूँ। "वह पतली तो नहीं हुई," मैं कहता हूँ।

"हाँ, हुई है," दादाजी कहते हैं।

पर मुझे तो कुछ फर्क नहीं दिखता।
मेरी नज़रों में तो वह पहले जैसी ही लगती है।

"शायद वह वही कर रही है जो सनोबर के पेड़ करते हैं," मैं कहता हूँ।
"क्या मतलब?" दादाजी पूछते हैं।
"शायद उसने खाना इसलिए बंद कर दिया है क्योंकि सर्दी शुरू हो रही है," मैं कहता हूँ।
"शायद वह ठंड बढ़ने के कारण खाना नहीं खा रही।"

दादाजी सिर हिलाते हैं।
"मुझे डर है कि वह सचमुच बीमार है,"
वे कहते हैं।





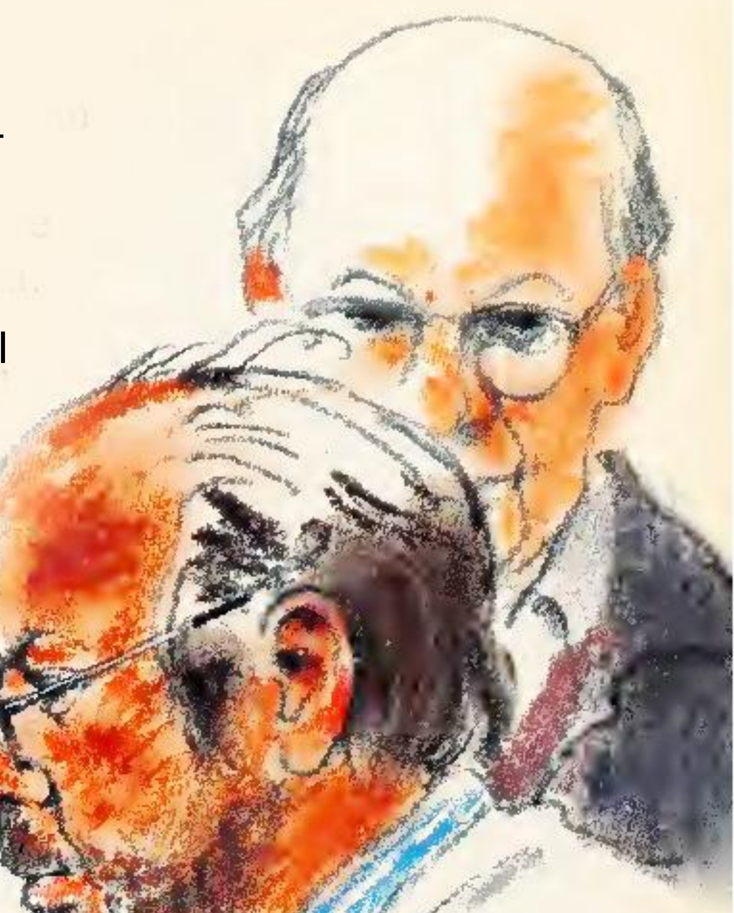


शुक्रवार को दादाजी लाइका को लेकर डॉक्टर के पास जाते हैं।
स्कूल से घर लौटते समय वे मुझे वहाँ के बीमार जानवरों के बारे में बताते हैं —
एक बिल्ली, दो कुत्ते, एक खरगोश, और लाइका ।

"क्या उसने फिर से खाना शुरू कर दिया?" मैं पूछता हूँ।
"नहीं," दादाजी कहते हैं, "वह अब भी खाना नहीं खा रही।"

"मुझे तो लगता है वह थोड़ी मोटी लग रही है," मैं कहता हूँ।

कुछ देर तक दादाजी चुप रहते हैं।
फिर धीरे से कहते हैं, "लाइका अब ठीक नहीं होगी।"









"लेकिन मुझे पूरा यक़ीन है कि वह ठीक हो जाएगी," मैं कहता हूँ। वह घास में पड़े एक टिन के डिब्बे को सूंघ रही है।

"नहीं," दादाजी कहते हैं। "वह अब ठीक नहीं होगी। वह बहुत बूढ़ी हो गई है।"

"वह तो बहुत हिम्मती है," मैं कहता हूँ।

दादाजी मुझे ऐसे देखते हैं जैसे उन्हें समझ न आया हो कि मेरा मतलब क्या है। "नहीं," वे कहते हैं, "वह हिम्मती नहीं, बस बूढ़ी है।"

घर लौटते समय हम दोनों चुप रहते हैं।
मुझे अच्छा नहीं लगता जब दादाजी किसी चीज़ को 'बूढ़ा' कहते हैं।
कभी-कभी वे खुद को भी "बूढ़ा लड़का" ऐसा कहते हैं —

यह सुनकर मुझे गुस्सा आता है।
मुझे यह सुनना पसंद नहीं कि कोई चीज़ बूढ़ी है।
दादी भी बूढ़ी थीं, और फिर वे मर गईं।

जब मैं कालीन पर लेटा होता हूँ और अपना सिर लैका पर टिकाए रहता हूँ,
तो मैं दादाजी से पूछता हूँ,
"क्या वह जल्द ही मर जाएगी?"

"हाँ," दादाजी कहते हैं।

मैं रोने लगता हूँ,
क्योंकि किसी के मरने पर बहुत दुख होता है —
ख़ासकर उसकी मौत पर,
जिस पर तुमने सिर टिकाया हो, और जिसके लिए तुमने लकड़ी की टहनियाँ फेंकी हों।

"अगले हफ़्ते मैं लाइका को फिर से डॉक्टर के पास ले जाऊँगा," दादाजी कहते हैं। "उसे एक ख़ास इंजेक्शन लगेगा, और फिर वह सो जाएगी।"

"सो जाएगी?" मैं पूछता हूँ। "क्या आपका मतलब है कि वह मर जाएगी?"

"हाँ," दादाजी कहते हैं। "लेकिन उसे कुछ महसूस नहीं होगा। उसे कोई दर्द नहीं होगा।"

"क्या उसका दिल रुक जाएगा?" मैं पूछता हूँ।
"हाँ," दादाजी कहते हैं। "पहले वह अपनी आँखें बंद करेगी, और फिर उसका दिल रुक जाएगा।"

"वह बहुत पुराना दिल है," मैं कहता हूँ, लैका के शरीर के नीचे उसकी धड़कन महसूस करते हुए।

थोड़ी देर बाद मैं दादाजी की गोद में बैठता हूँ और कुछ देर तक रोता रहता हूँ।

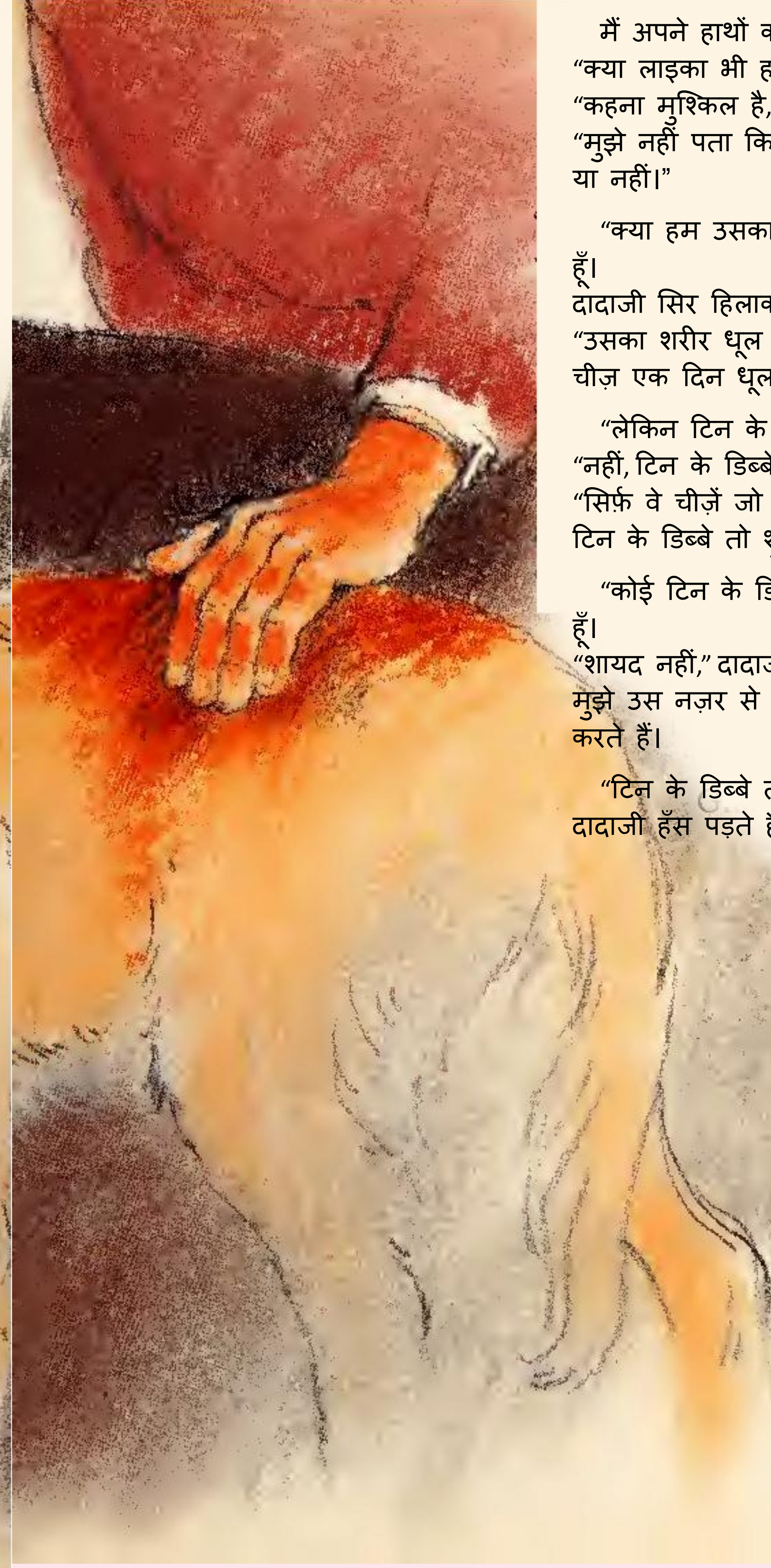
"जो भी जीवित है, उसे किसी न किसी दिन मरना ही होता है," दादाजी कहते हैं।

मैं लाइका के बारे में सोचता हूँ — और उदास हो जाता हूँ।



"क्या हम उसे बाद में दफ़न करेंगे?" मैं पूछता हूँ।
"हाँ, हम उसका शरीर दफ़न कर देंगे," दादाजी कहते हैं। "पर हम सब कुछ दफ़न नहीं करेंगे। कुछ ज़रूरी चीज़ पीछे रह जाएगी।"
"वह क्या?" मैं पूछता हूँ।
"उसे सहलाने का अहसास – उसकी याद," दादाजी कहते हैं।
"तुम्हारा हाथ याद रखेगा कि सहलाने में कैसा महसूस होता था।"





मैं अपने हाथों को देखता हूँ।
"क्या लाइका भी हमें याद रखेगी?" मैं पूछता हूँ।
"कहना मुश्किल है," दादाजी कहते हैं।
"मुझे नहीं पता कि मरने के बाद कुछ याद रहता है या नहीं।"

"क्या हम उसका शरीर कब्र में रखेंगे?" मैं पूछता हूँ।
दादाजी सिर हिलाकर हाँ कहते हैं।
"उसका शरीर धूल में बदल जाएगा," वे कहते हैं। "हर चीज़ एक दिन धूल में बदल जाती है।"

"लेकिन टिन के डिब्बे नहीं," मैं कहता हूँ।
"नहीं, टिन के डिब्बे नहीं," दादाजी कहते हैं।
"सिर्फ़ वे चीज़ें जो ज़िंदा होती हैं, धूल में बदलती हैं। टिन के डिब्बे तो शुरू से ही मरे हुए होते हैं।"

"कोई टिन के डिब्बे को याद नहीं करता," मैं कहता हूँ।
"शायद नहीं," दादाजी कहते हैं,
मुझे उस नज़र से देखते हुए जैसे वे कभी-कभी देखा करते हैं।

"टिन के डिब्बे तो दुस्साहसी होते हैं," मैं कहता हूँ।
दादाजी हँस पड़ते हैं, और मैं भी हँसने लगता हूँ।

फिर एक दिन दादाजी मुझे स्कूल से लेने आते हैं, और लाइका उनके साथ नहीं है।
मुझे डर लगता है, और मैं तुरंत रोने लगता हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि वह मर गई है।

“लाइका का शरीर कहाँ है?” मैं दादाजी से पूछता हूँ,
मैं सोफ़े के सामने लेटा हूँ, और अपने हाथ से कालीन को महसूस कर रहा हूँ।

कालीन अब भी लाइका की खुशबू देता है, लेकिन उसके बर्तन रसोई से गायब हैं।

“गैराज में,” दादाजी कहते हैं। “मैं उसे कल दफ़न करूँगा।”

“मैं देखना नहीं चाहता,” मैं कहता हूँ।

दादाजी सिर हिलाते हैं और कहते हैं, “अगर तुम चाहो, हम उसकी कब्र को किसी और दिन देख सकते हैं।”

मैं कालीन को महसूस करता हूँ और उसकी खुशबू सूँघता हूँ,
और सोचता हूँ कि क्या मैं कभी देखना चाहूँगा।





अगले हफ़्ते हम कब्र देखने जाते हैं।
कब्र जंगल के बीचों-बीच, उस झील के पास है जहाँ लाइका तैरा करती थी।
अगर आप उसकी कब्र के पास खड़े हों, तो पानी की ओर देख सकते हैं।

“आपने बहुत अच्छा जगह चुनी,” मैं दादाजी से कहता हूँ।

लैका की कब्र सनोबर के पेड़ के नीचे है,
और उसके कुछ पीले पत्ते ज़मीन पर गिर गए हैं।





घर लौटने के बाद, मैं कालीन पर लेट जाता हूँ और अपने हाथ से उसे सहलाता हूँ।
इसमें अब भी लाइका की खुशबू है।
थोड़ी ही देर में मैं सो जाता हूँ।

"तुम इसे रख सकते हो, अगर तुम चाहो," दादाजी कहते हैं, जब मैं जागता हूँ।
"मैं नया कालीन खरीदने वाला हूँ।"
मैं ज़रूर इसे रखना चाहूंगा।

दादाजी मेरी माँ को उनके काम पर फोन करते हैं,
और शाम को वह मुझे और कालीन लेने के लिए कार लेकर आती हैं।



जब मैं अपने कमरे में कालीन को खोलता हूँ और उस पर लेट जाता हूँ,
तो मैं उसकी खुशबू सूँघता हूँ।
लाइका की खुशबू अब भी वहाँ है।

माँ दरवाज़े से झाँकती हैं और मुझसे पूछती हैं कि मैं क्या कर रहा हूँ।
"मैं लाइका को याद कर रहा हूँ," मैं कहता हूँ।
"समझ गई," वह कहती हैं।

सोने से पहले मैं उन्हें कहता हूँ कि कालीन को वैक्यूम न करें।
मैं पापा को भी बताता हूँ, और वे वादा करते हैं कि नहीं करेंगे।

बाद में मैं माँ से पूछता हूँ कि दुस्साहसी का क्या मतलब है, और वह मुझे समझाती हैं।

अगले दिन जब मैं जागता हूँ, तो ज़मीन बर्फ से सफ़ेद हो चुकी है।
लेकिन विलो के पेड़ अभी भी हरे हैं,
पहली सर्दियों की बर्फ के बावजूद।

मैं मुस्कुराता हूँ और अपने आप से कहता हूँ,
"वह दुस्साहसी विलो।"







